अध्याय 1

परंपरागत विचार– अध्यात्मवादी, अधिदैवीयवादी, अधिभौतिकवादी– आदर्शवाद

रहस्यमयता और कल्पनाशीलता के योगफल में वांगमय की रचना

आदर्शवाद का मूल आशय– श्रेय के लिए आस्थावादी प्रकृति में मानव मानस को परिवर्तित करना, भय प्रलोभन से मुक्ति हेतु

जो कुछ भी हम नहीं जानते हैं– रहस्य

नहीं जानते हुए मनवाने का सारा प्रयास– आस्था

अध्यात्मवाद–

> अनुभवमूलक विधि से जीता जागता हुआ मानव की आपसी चर्चा
>
> अनुभवमूलक विधि से जीता जागता विवेक और विज्ञान की परामर्शात्मक प्रस्तुति

सत्यबोध और सर्वतोमुखी समाधान हर मानव की चाहना, पूरा करने हेतु अनुभवात्मक अध्यात्मवाद की आवश्यकता

अध्यात्मवाद का लक्ष्य– मोक्ष; स्वर्ग– सम्मोहनात्मक, आकर्षण; स्वर्ग पहुँचने के लिए पुण्य(त्याग, परमार्थ, दान, ध्यान, स्मरण, आचार्य सेवा, सुश्रुषा, स्तुति, कीर्तन, परोपकार, शेष प्रकृति के साथ दया, मना को धोना, स्थिर करना)

भौतिकवाद :– भौतिक वस्तुएँ सुख–सुविधा/विकास का आधार हैं।

हर रचना– भौतिक और रासायनिक, संघर्ष से विकास

भय– नरक, अमानवीय व्यवहार से सुरक्षा हेतु हथियार

प्रलोभन– स्वर्ग, भोग, अतिभोग– सुविधा संग्रह

अस्तित्व सहज सह–अस्तित्व रूपी ध्रुव, मानव स्वीकृत प्रामाणिकता रूपी ध्रुव के मध्य में अनुभव सहज अनिवार्यता, आवश्यकता, प्रयोजन और उसकी निरंतरता की ज्ञान सम्मत, विवेक सम्मत और विज्ञान सम्मत विधि से प्रस्तुति

अध्याय 2

आदर्शवादी + भौतिकवादी विधि के परिणामस्वरूप धरती बीमार, पर्यावरण समस्या, जनसंख्या समस्या, आर्थिक व राजनैतिक समस्या

सह–अस्तित्व– विकास क्रम– विकास– जागृति क्रम– जागृति– प्रमाणपूर्वक जीना (अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन), जिम्मेदारी(दायित्व व कर्तव्य निर्वाह) पूर्वक जीना

विज्ञान की सकारात्मक उपलब्धि – दूरदर्शन, दूरश्रवण, दूरगमन

नकारात्मक उपलब्धि – सामरिक यंत्र–तंत्र, धरती बीमार

जीवन :– अक्षय शक्ति, बल सम्पन्नता सहित कार्यशील

एक गठनपूर्ण परमाणु, चैतन्य इकाई

अणु भार–बंधन से मुक्त, आशा बंधन से युक्त

भ्रमवश आशा,विचार इच्छा पूर्वक खुद को शरीर मान लेना

जगृतिशीलता, जागृति, जागृतिपूर्णता

मानव :– जीवन और शरीर का संयुक्त रूप

शरीर एक भौतिक रासायनिक रचना (प्राणकोषा और रचना–सूत्र के आधार पर विविध वंश; रचना की विविधता ही नस्ल का आधार)

जीवन कल्पनाशील और कर्मस्वतंत्र; फल भोगते समय परतंत्र

संज्ञानशीलता ही अनुभवसूत्र,संवेदनशीलता ही कार्य–सूत्र; अनुभव ही ज्ञान स्वरूप

अनुभवमूलक विचार= अनुभवात्मक अध्यात्मवाद, अनुभवमूलक क्रियाकलाप सत्य, समाधान और न्याय के रूप में प्रमाणित; नियम, न्याय, धर्म, सत्य यह अनुभवमूलक विधि से ही प्रमाणित

जानने–मानने का तृप्ति बिन्दु= अनुभव;

प्रामाणिक होने के लिए पहचानना, निर्वाह करना

जानने की वस्तु– सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व विकास, रचना–विरचना, जीवन, जागृति

मानने का स्वरूपः– यह सत्य है, इसे स्वीकारना है। जानने का फलन मानने के रूप में आता है।

हर स्थिति में वस्तु सहज वास्तविकताओं को जानना सहज है। इसी क्रम में उसके गति और प्रयोजन के साथ सह–अस्तित्व में से के लिए आवश्यकताओं को स्वीकारना ही मानना है।

जानने का आधार क्यों, कैसे, कैसा; मानने का आधार प्रयोजन होना है।

हर बच्चा– न्याय का याचक, सत्यवक्ता, सही कार्य–व्यवहार का इच्छुक, इसे प्रमाणित करने की आवश्यकता, आकांक्षा, आशा, अभीप्सा हर मानव में

सर्वशुभ– समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

जीवन सहज शुभ– सुख, शांति, संतोष, आनंद

मानव सहज शुभ गति– मानवीयतापूर्ण आचरण

हर व्यक्ति में शुभ, सुन्दर, समाधान रूप ही स्वायत्त मानव

अनुभवमूलक विधि से ही नियम, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीना सहज

अनुभवमूलक विधि से जीने की कला विज्ञान और विवेक सम्मत विधि से अध्ययन पूर्वक संपन्न करने हेतु अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

अनुभव ही ठोस प्रमाण, व्यवहार एवं प्रयोग प्रमाण; प्रमाणों का धारक–वाहक मानव

जागृति परंपरा की महिमावश हठधर्मिता का विलय

परंपरागत समस्या– अधिकारवाद, भोगवाद, भक्तिवाद, विरक्तिवाद, शक्ति केंद्रित शासन, शासक वर्ग और आम जनता, सुविधा केंद्रित विकास, शासन व लोक मानसिकता का मिलन बिन्दु स्थापित नहीं, शासक वर्ग संवाद से पहले ही निर्णय लिये रहता है।

भय से मुक्ति हेतु राज्यगद्दी एवं धर्मगद्दी

विकल्प :– समाधान केंद्रित परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था

मानव परंपरा सहज अभिव्यक्ति–

अनुभवमूलक विधि से किया गया विचार, व्यवहार, कार्य

अर्पण–समर्पण

संबंध–मूल्य–मूल्यांकन,उभय,तृप्ति

परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन

लाभ–हानि मुक्त विनिमय

प्रामाणिकतापूर्ण प्रबोधन(उपकार)

मानव सहज मानसिकता–

न्याय, धर्म, नियम, प्रामाणिकता

समृद्धि, सह–अस्तित्व, वर्तमान में विश्वास

परिवार, स्वायत्त, समाज, व्यवस्था

मानवीय शिक्षा संस्कार, स्वास्थ्य संयम, उत्पादन कार्य, न्याय सुरक्षा, विनिमय कोष

भ्रमात्मक मानसिकता –

भय, प्रलोभन,आस्था ग्रसित

धर्म, राज्य एवं जनमानसिकता का तालमेल नहीं

राज्यगद्दी व धर्मगद्दी के वचन और कर्म में विसंगतियाँ

सर्वमानव सुखी होने का सूत्र= अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद– समाधानात्मक भौतिकवाद

संघर्षात्मक जनवाद – व्यवहारात्मक जनवाद

रहस्यात्मक अध्यात्मवाद– अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

प्रश्नः– क्या चाहिए –

शक्ति केंद्रित शासन/समाधान केंद्रित व्यवस्था

संग्रह–सुविधा/न्याय, समाधान, समृद्धि

लाभोन्मादी, भोगोन्मादी, कामोन्मादी शास्त्र/वाद त्रय

विखण्डनवादी विज्ञान/सह–अस्तित्ववादी विज्ञान

रहस्यमूलक ईश्वर केंद्रित चिंतन/अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन

अस्थिरता,अनिश्चयतामूलक वस्तु केंद्रित चिंतन/अस्तित्वमूलक मानव केंद्रितचिंतन

वर्तमान में भ्रम का पोषण– धर्म(अपना–पराया), राज्य(द्रोह–विद्रोह), व्यापार(शोषण) गद्दी– शिक्षा गद्दी भ्रम का स्रोत

केवल मानव ही

- अस्तित्व सहज सभी अवस्थाओं का द्रष्टा
- मानवीयतापूर्ण क्रियाकलापों का कर्ता
- मानवापेक्षा सहज समाधान,समृद्धि,अभय,सह–अस्तित्व का भोक्ता

समृद्ध मानव परंपरा=

- अखण्ड समाज,सार्वभौम व्यवस्था, मानवीय परंपरा=पाँचों आयाम में सुलभता
- समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व पूर्वक जीने की कला, विचार शैली, अनुभव बल की संपन्नता

जागृति विधि से

- संग्रह, सुविधा, पूँजी पर अधिकार की निरर्थकता
- आकाश, खनिज, वन, समुद्र, धरती पर अधिकार की कल्पनाएँ भ्रामक
- शरीर, ज्ञान, धर्म, विचार, मानव, बौद्धिक संपदा का व्यापार व्यर्थ

संसार का तात्पर्य सार रूप में अर्थात् प्रयोजन रूप में रचनाओं को प्रस्तुत करना

जागृति परंपरा के अभाव के कारण विज्ञान की उपलब्धियों का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता के स्थान पर सुविधा–भोग–अतिभोग का साधन

मानसिकता

भोग – न्याय

संग्रह – समृद्धि

संघर्ष – समाधान

द्रोह – पूरकता

विद्रोह – धीरता

शोषण – विनिमय

युद्ध – सह–अस्तित्व

शासन – सार्वभौम व्यवस्था

समुदाय – अखण्ड समाज

यही अनुभवात्मक अध्यात्मवाद का तात्पर्य; नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य से सूत्रित

अनुभव समुच्चय–अनुभवमूलक विधि से दसो क्रियाओं का अनुभव के अनुरूपहोना

कर्म स्वतंत्रता का दुरूपयोग– धरती का स्वास्थ्य खराब, मानव में दुख

प्रत्येक जीवन रचना, शक्ति, बल और लक्ष्य में समता

श्रम ही बंधन एवं बंधन मुक्ति ही जीवन जागृति

मानवापेक्षा एवं जीवनापेक्षा साथ–साथ सफल

अध्याय 3

भौतिकवादः– रचना के अनुसार चेतना पैदा; यंत्र प्रमाण

आदर्शवादः– ईश्वर से सब पैदा; आदर्श व्यक्ति(आप्त वाक्य) ही प्रमाण

चेतना से पदार्थ और पदार्थ से चेतना प्रमाणित नहीं

आदर्शवादः– आप्तवचन प्रमाण, विज्ञानवाद–यंत्र प्रमाण –

विज्ञानवाद की समस्याएँ

विशेषज्ञता; वंशानुषंगीयता; सापेक्षवाद; गति ऊर्जा की आवश्यकता; तरंग वस्तु या अवस्तु; मात्रा–विज्ञान अस्थिरता, अनिश्चयता मूलक

वर्तमान में

संबंध–सुविधा–प्राकृतिक समस्या

कला पक्ष के नाम पर रूढ़ी आदत ही संस्कृति– समाजशास्त्र

जो पढ़ा रहे हैं,खुद उसमें विश्वास नहीं, उससे भिन्न जीना

वर्तमान समाज– एक संघर्षशील मानव समुदाय– प्रतिस्पर्द्धा

धर्म और राज्य में संघर्ष

निश्चितता, स्थिरता के प्रधान बिन्दु – 12 (पृष्ठ 53)

सह–अस्तित्व– विकास क्रम– विकास– जीवनी क्रम– जागृति क्रम– जागृति पूर्वक क्रियापूर्णता– जागृतिपूर्णता पूर्वक आचरणपूर्णता

अनुभवपूर्वक जीने की कला विकसित होने की आवश्यकता

अनुभवपूर्वक व्यवहार, कार्य, व्यवस्था में भागीदारी

अनुभवपूर्वक विचार, संप्रेषणा, वांगमय

जागृति + मानवत्व

मानवत्व–

मानवीयतापूर्ण स्वभाव(धीरता, वीरता, उदारता, दया कृपा, करूणा) + प्रवृत्ति(ऐषणात्रय + प्रमाण) + दृष्टि(न्याय, धर्म, सत्य)

स्वायत्त, परिवार, समाज, व्यवस्था मानव

समाधान, समृद्धि, अभय,सह–अस्तित्व को प्रमाणित करना

मनाकार को साकार करने वाला

मनःस्वस्थता का आशावादी + प्रमाणित करनेवाला

मानवत्व सर्वमानव में सर्वदेश में सर्वकाल में वांछित प्रज्ञा, विचार, प्रबोधन, संबोधन, आचरण, व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी

प्रज्ञा– जीवन ज्ञान + अस्तित्वदर्शन ज्ञान

अस्तित्वदर्शन ज्ञान– सत्ता + इकाई का सह–अस्तित्व

सत्ता– व्यापक, पारदर्शी, पारगामी, स्थितिपूर्ण; इकाई– गति, दवाब, प्रभाव, तरंग

अस्तित्व निरंतर अविभाज्य है। अस्तित्व मूल भाव, व्यवस्था मूल भाव

अस्तित्व स्थिर, विकास एवं जागृति निश्चित

अनुसंधान विधि

निर्विचार स्थिति में अस्तित्व स्वीकार/बोध सहित सभी ओर वस्तु सब आकाश में समाई हुई वस्तु दिखती रही, इसलिए आकाश में संयम करने की तत्परता बनी।

हर व्यक्ति अनुभव योग्य, इसलिए अध्यात्मवाद को प्रस्तुत करने में सत्य सहज प्रवृत्ति उद्‌गमित हुई

सर्वशुभ मानव परंपरा में स्थापित होने का ज्ञान, दर्शन, आचरण, व्यवस्था, शिक्षा प्रवाह को स्थापित करना आवश्यक समझा गया।

परंपरागत विधि से समाधि–संयम से अस्तित्व में अनुभव

इसलिए विगत को धन्यवाद, वर्तमान में प्रस्ताव एवं भविष्य के लिए सर्वशुभ योजना की प्रस्तुति

समाधि= स्वान्तः सुख, मौन विधि साधना, सर्वाधिक मौन अवस्था, सर्वशुभ की कामना, सभी को समान साधना–अभ्यास; किन्तु ज्ञान दर्शन, विचार, शैली, सर्वशुभवादी कार्यक्रमों को उद्‌घाटित करना संभव नहीं; एक शरीर यात्रा में सफलता अनिश्चित, मौन विधि साधना पूर्णतया जीवन विरोधी प्रणाली

जीवन रचना समान, शक्ति और बल अक्षय, लक्ष्य क्रियाकलाप समान; शरीर रचना में विविधता; यही अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था का मूल सूत्र

जागृति सर्वसुलभ/लोकव्यापीकरण हेतु परंपरा की आवश्यकता

अस्तित्व स्वयं सह–अस्तित्व होना ही परंपरा होने का नित्य सूत्र है।

सह–अस्तित्व में ही जीने का प्रमाण, परस्पर पहचान और निर्वाह सहज विधि

जीवन+शरीर का सह–अस्तित्व होने के कारण

1. अपनी कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता को शरीर से भिन्न तरंग के रूप में
2. आशा, विचार, इच्छा का स्वयं में से के लिए परीक्षण
3. अध्ययन क्रम में अनुभूतियां/भास–आभास का परीक्षण सहज

आस्वादन का भास, न्याय, धर्म, सत्य रूपी नित्य वस्तु का भास

चिंतन ही न्याय, धर्म, सत्य का आभास होना और प्रतीति होना

साक्षात्कार– प्रयोजनों का निश्चयनसहित तृप्ति

बंधन का स्रोतः–भ्रमित जीवन क्रिया; प्रिय, हित, लाभ दृष्टि, 4 विषय, दीनता, हीनता, क्रूरतावादी प्रवृत्ति

समाज एवं व्यवस्था अविभाज्य

परस्पर पहचानना, निर्वाह करना में उपयोगिता सहित पूरक होना शाश्वत नियम

हर मानव में समाधान की अपेक्षा;

मानवाधिकार– हर व्यक्ति को सुविधा, दण्ड में सुधार, आपदाग्रस्त हेतु राहत कार्य

संपूर्ण प्रयोग उत्पादन कार्य व औषधि हेतु

उत्पादन कार्य व औषधि–

सामान्य आकांक्षा व महत्वाकांक्षा में प्रयोजित

उपयोग, सदुपयोग और प्रयोजनशीलता

अनुभव की महिमा– सर्वतोमुखी समाधान, समस्त भ्रम व उनके प्रभावों का विलय/निराकरण

सर्वतोमुखी समाधान= क्यों, कैसे का उत्तर में निष्ठा + उसकी अक्षुण्णता

अध्याय 4

जीवन में मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा अविभाज्य रूप में क्रियाशील; मध्यांश सहित 4 परिवेश; समझदारी सहित परावर्तन–प्रत्यावर्तनपूर्वक जीवन सहज क्रियाओं का मानव परंपरा में प्रकाशन

जड़ प्रकृति अणुबंधन और भार बंधन पूर्वक भौतिक–रासायनिक रचनाओं में भागीदारी

चैतन्य प्रकृति अणुबंधन एवं भारबंधन मुक्त, आशा बंधनयुक्त, आशानुरूप कार्य गति पथ सहित मनोवेग के अनुपात में गतिशील; गठनपूर्णता के उपरांत अक्षय शक्ति, बल संपन्न– परिणाम का अमरत्व

भ्रमवश

प्रिय, हित, लाभ संबंधित संग्रह, सुविधा, भोग द्वारा प्रलोभन का प्रकाशन

युद्ध, शोषण, द्रोह ,विद्रोह, संघर्ष द्वारा भय का प्रकाशन

भक्ति–विरक्ति, त्याग–वैराग्य द्वारा आस्था का प्रकाशन

इसी अर्थ में वर्तमान परंपरा

जीवनी क्रम में आशा बंधनपूर्वक वंशानुषंगीय क्रियाकलाप

सिर्फ इच्छा, विचार, आशा पूर्वक जीने से इच्छा, विचार, आशा और आचरण में विविधता – मानवीयता स्थापित नहीं हो सकती

अनुभव करने वाला– जीवन, अनुभव की वस्तु– अस्तित्व सहज सह–अस्तित्व, प्रमाणित करने योग्य– मानव, प्रमाणित होने की वस्तु–अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था

जीवन ज्ञानः जीवन रचना + जीवन क्रियाकलापों का निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण

मन वृत्ति में, वृत्ति चित्त में, चित्त बुद्धि में, बुद्धि आत्मा में, आत्मा सह–अस्तित्व में अनुभूत

जीवन ही भ्रमित(शरीर को जीवन मान लेना); जीवन ही जागृति होना नियति सहज क्रिया है।

मानव सहज मौलिकता मानवीयता; यही जागृति एवं भ्रम मुक्ति सहज प्रमाण

जागृति= स्वयं व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी; मानवीयतापूर्ण आचरण; परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में जीना

भ्रमित मानव द्वारा कल्पनाशीलता का प्रयोग– शरीर और इन्द्रिय सन्निकर्ष के संदर्भ में

जीवन सहज प्रवृत्ति, प्रयास, आवश्यकता के योग संयोग विधि से जागृति होना

अध्ययन और अनुसंधान दोनों विधियों से पहले अस्तित्व में बोध, तदोपरांत आत्मा अस्तित्व में अनुभूत

अध्ययन विधि में लोकव्यापीकरण के लिए कम समय में बोध होने की स्थिति; अनुभव सहज बोध दोनों विधि में एक; यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता विधि से अध्यापन सामग्री, वस्तु, प्रक्रिया परिपूर्ण रहना अध्ययन हेतु आवश्यक

अनुसंधान हेतु लक्ष्य सम्मत जिज्ञासा; अज्ञात प्रश्न चिह्न; हर अनुसंधान अध्ययन व अध्यापन विधि से लोकव्यापीकरण होना सुगम

आत्मा सहज मध्यस्थ क्रिया ही मध्यस्थ बल एवं शक्ति; अनुभव प्रभाव क्षेत्र में जीवन की समस्त परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन क्रियाएँ तृप्त; यही जीवन–अपेक्षा (सुख, शांति, संतोष, आनंद); परंपरा में व्यवहारपूर्वक मानवपेक्षाएँ साक्षित

सम–विषमात्मक अतिरेकों को सामान्य बनाए रखने में नियोजित बल और शक्ति = मध्यस्थ प्रभाव(नाभिकीय अंश का वैभव)

स्वभाव गति= यथा स्थिति में संतुलन; विकास में प्रवृत्ति

नियम पूर्वक रचना–विरचना पूरकता के अर्थ में, विकास–क्रम प्रमाणित

समृद्ध धरती= चारों अवस्था की परंपरा(अपनी–अपनी अनुषंगीयता के आधार पर)

जागृति क्रम = शरीर को जीवन समझते हुए भी शरीर कृत्यों से तृप्त न होना, अव्यवस्था को देखकर पीड़ित होना, अन्याय और समस्या से पीड़ित होना, बहुमुखी प्रवृत्ति, कल्पनाशीलता और कर्मस्वतंत्र जीवन में, सदुपयोग व दुरूपयोग दोनों का अवसर, 5 ज्ञानेन्द्रिय, 5 कर्मेन्द्रिय सीमागत कार्यकलापों के अतिरिक्त तथ्य को उद्घाटित करना, समृद्धिपूर्ण मेधस

मध्यस्थ क्रिया (मध्यांश) का स्वरूप और कार्य– यथास्थिति को बनाए रखने और जीवनी क्रम, जागृति क्रम, जागृति को अक्षुण्ण बनाए रखते हुए नित्य वैभव को नियंत्रित किये रहना ही परंपरा के रूप में मध्यस्थ क्रिया सहज मौलिकता; सम+विषम (अतिरेक)का नियंत्रयण; निश्चित दूरी से कम या अधिक होना + नाभिकीय बल एवं शक्ति के प्रयोगविधि से संतुलित रहना

मध्यस्थ क्रिया की महिमा

गठनपूर्णता एवं उसकी निरंतरता को बनाए रखने में कार्यरत

शरीर को जीवंत नियंत्रित बनाए रखने में; जीवन सहज नियंत्रण,

स्वभाव(मानवत्व सहित अभिव्यक्त,प्रकाशित होना) गति का नित्य स्रोत,

अव्यवस्था की पीड़ा,

व्यवस्था की भासपूर्वक आवश्यकता और पाने की आशा;

जागृति की संभावना की ओर ध्यानाकर्षण,

जागृति की आवश्यकता, पूर्ति, प्रमाणीकरण;

क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता,

जागृतिपूर्णता – मध्यस्थ क्रिया के अनुरूप समूचा जीवन क्रियाकलाप होना

बोध = समझदारी

सत्ता स्वयं ही मध्यस्थ, स्थितिपूर्ण; स्थितिपूर्णता का वैभव व्यापक, पारदर्शी, पारगामी, पारगामीयता का वैभव इकाई में बल संपन्नता(प्रकाशमानता, क्रियाशीलता)

मध्यस्था सत्ता, क्रिया, बल, शक्ति, जीवन सहज प्रमाण ही मानव परंपरा

जागृत जीवन, सह–अस्तित्व में अनुभूत रहते हुए तृप्त; ऐसी तृप्ति की बहुमुखी अभिव्यक्ति ही परंपरा

मानव ही प्रमाण का आधार और गति; अभिव्यक्ति, संप्रेषणा क्रम में वांगमय एक साधन

संपूर्ण चित्रण एवं वांगमय सुनने एवं देखने की क्रिया को पूरा करता है।

चित्रण विधि की अनेक विधियाँ

भारबंधन से मुक्ति ही अणुबंधन से मुक्त होने का सूत्र

सभी दिव्यमानव का समान कारकता, प्रेरकता

आत्मा जीवन सहज सभी क्रियाकलापों को नियंत्रित, संतुलित, प्रेरित

अस्तित्व ही सह–अस्तित्व सहज परम सत्य (स्थिति सत्य); अनुभव में स्पष्ट व संपूर्ण अनुभव संप्रेषणा योग्य

जीवन शरीर यात्रा में मानव; शरीर त्यागने के उपरांत देवी, देवता, भूत, प्रेत

अनुभवमूलक शिक्षा–संस्कार विधि से हर मानव में जागृति संभव

भ्रम :– ब्रह्मवाणी से उद्घाटित नहीं किया जा सकता है; देवी देवता अव्यक्त, अदृश्य, नहीं समझ में आने योग्य; समझने हेतु अनिश्चित काल तक ध्यान, उपासना, आराधना, प्रार्थना; समाधान, सत्य अपना–अपना; मानव कभी सुधर नहीं सकता; बैर–विहीन परिवार नहीं हो सकता; देवी, देवता सिद्ध लोग ही हमको तारेंगें, हम स्वयं से तरने योग्य नहीं है; मानव पराधीन, सामान्य आकांक्षा संबंधी वस्तुओं में विपन्नता; व्यक्ति स्वार्थी, अज्ञानी, पापी, अपराधी, गलती करने वाला; शक्ति केद्रिंत शासन–संविधान, गलती अपराध हेतु दण्ड–विधान; पड़ोसी देश और धर्म– विरोधी व शत्रु; दासता, सामुदायिक धर्म व राज्य के प्रति दासता को स्वीकार करने के लिए परंपरागत विधि से कार्यक्रमों को प्रस्तुत करना; आवेशित गति को वैभव व आवश्यक मानना; आवेशित गति व संघर्ष के लिए मानव परंपरा को प्रेरित और विवश करना और रहना; शरीर को जीवन समझते हुए समझदार होने का दावा करना; मानव को जीव–जानवर संबोधित करना; सापेक्षता को स्वीकारना; वस्तु/मात्रा को अस्थिर, अनिश्चित मानना; इन्द्रिय सन्निकर्ष में अनुभव होता है ऐसा मानना, इसके लोकव्यापीकरण का उपाय करना; उन्मादत्रय को प्रगतिशील, विकासशील, अत्याधुनिक मानना; भ्रमित मानसिकता में आँखों से देखे को संपूर्ण सत्य मानना; यंत्र और मापदंड से मानव को प्रमाणित करना संभव; मानव को असमान मानना; धर्म के नाम पर समुदाय मानसिकता में जीना

जागृतिपूर्ण परंपरा में ही सार्वभौम धर्म कर्म, तदनुरूप विचार शैली और व्यवहार तथा अनुभव ही संतुलित रूप और गति – यही जागृत परंपरा का स्वत्व

संपूर्ण भ्रम निभ्रमता में, संपूर्ण गलती सुधार में विलय; इस हेतु अस्तित्वमूलक मानव केद्रिंत चिंतन

परंपरागत गलती का फल– सुविधा और युद्ध

अनुभव अस्तित्व में से के लिए होने के आधार पर संपूर्ण अनुभव संप्रेषणा योग्य; जीवन ही शरीर त्यागने के उपरांत देवी, देवता, भूत, प्रेत; अनुभव सर्वतोमुखी समाधान विधि से अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के रूप में प्रमाणित; हर मानव अनुभवमूलक शिक्षा–संस्कार पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व की निरंतरता पूर्वक जीने में सक्षम; अनुभवमूलक विचार, व्यवहार, (कार्य) से वैरविहीन परिवार संभव; जागृत, प्रमाणित व्यक्ति से प्रेरणा पाकर स्वयं प्रमाणित होना नियति सहज और संभावना नित्य समीचीन; अनुभवमूलक प्रमाण, पद्धति, प्रणाली से तृप्ति व पूरकता पूर्वक जीते हुए समृद्धि संभव; मानव जन्म से न्याय का याचक, सही कार्य–व्यवहार का इच्छुक, सत्यवक्ता; परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी हेतु इच्छुक, उत्साहित; परिवार मानव के रूप में जीने देकर जीने की चाहना; जागृतिपूर्ण विधि से कर्मस्वतंत्रता का तृप्ति बिन्दु रूपी स्वानुशासन सहज स्वतंत्रता, और कल्पनाशीलता का तृप्ति बिन्दु परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में प्रमाणित; प्रकृति(4 अवस्था) स्वभाव गति संपन्न; हर इकाई स्थिति व गति का अविभाज्य रूप और गति के रूप में परस्पर–पूरकता; मानव जीवन व शरीर का सह–अस्तित्व; मानव हर इकाई की मौलिकता को जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने योग्य; हर इकाई में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म रूपी मात्रा अविभाज्य; अस्तित्व स्थिर, अस्तित्व में विकास और जागृति निश्चित; मध्यस्थ क्रिया आत्मा ही अस्तित्व में अनुभूत; आँखों से आंशिक(आंशिक रूप) दिखना, वस्तु रूप, गुण, स्वभाव, धर्म के रूप में अविभाज्य; यंत्रों का चित्रण व रचना मानव द्वारा; मानव में समानता

मानव धर्म= सर्वतोमुखी समाधान आधारित व्यवस्था में जीने देकर जीना

अनुभव मात्र सत्य का ही है क्योंकि वह अपरिवर्तनीय है; अनुभव यदि परिवर्तनशील है तो वह अनुभव नहीं है।

अध्याय 5

बंधन और मुक्ति

परंपरा में बंधन का कारण स्पष्ट नहीं, मोक्ष हेतु सार्वभौम उपाय का प्रतिपादन नहीं– यही मतभेद विविध संस्कृति का आधार

समुदाय का आधार – नस्ल रंग, वस्तु संग्रह–विपन्नता, आजीविका, कार्य, भाषा, देश, आस्था, विकसित–अविकसित, संग्रह–भोग, जाति, मत, संप्रदाय, धर्म

प्रश्न– कौन बंधन में है? किसने बाँध रखा है? कौन मुक्ति दिलाता है? ये तीनों वस्तु कहाँ हैं? क्यों ऐसे बंधन कृत्य को करता है? मुक्ति पाने के बाद उसका प्रयोजन?

कौन बंधन में है? –कम शक्तिशाली

भ्रमित जीवन (4 विषय 5 संवेदना को राजी करने के रूप में)

किसने बाँध रखा है? –ज्यादा शक्तिशाली; अच्छा/सही नहीं हो सकता

क्योंकि बंधन दुख व क्लेश का कारण;

कोई नहीं। अस्तित्व सह–अस्तित्व पूर्वक व्यवस्था सूत्र; जागृति के पूर्व आशा, विचार, इच्छा, प्रिय, हित, लाभ, प्रलोभन, आस्था के संयोग से होनेवाला क्रियाकलाप ही भ्रम

कौन मुक्ति दिलाता है? –सबको मुक्ति क्यों नहीं दिला देता

जीवन जागृति, तीनों चेतनापूर्वक भ्रम मुक्ति दिलानेवाला कोई नहीं

प्रेरक – जागृत जीवन

ये तीनों वस्तु कहाँ है?

अस्तित्व में; जीवन, जागृति को प्रमाणित करने के पहले भ्रमित

जीवनी क्रम, जागृति क्रम(भ्रम बंधन), जागृति, जागृति पूर्णता(मुक्ति)

क्यों ऐसे बंधन कृत्य को करता है?

> जीवन–जागृति क्रम में भ्रम को व्यक्त करने वाला, स्वीकारने वाला, भ्रम से पीड़ित होने वाला और जागृत होने वाली वस्तु जीवन है।

मुक्ति पाने के बाद उसका प्रयोजन?

> जागृति और जागृति पूर्णता के अनन्तर उसकी निरंतरता की परंपरा

जागृति क्रम की निरंतरता नहीं; भ्रम–बंधन की निरंतरता जीवावस्था में प्रमाणित

जीने की आशा = मन सहज आस्वादन अपेक्षा का प्रकाशन

जीवन सहज कार्य प्रतिष्ठा को यंत्र/आँखों से देखना संभव नहीं क्योंकि आँखों से अधिक गणित, गणित से अधिक गुण, गुण से अधिक कारण भाषा से इंगित

आँखों से रूप का आंशिक भाग, गणित से संपूर्ण रूप + आंशिक गुण(प्रभाव सहित गति), संपूर्ण गुण +स्वभाव– गुणात्मक भाषा, कारणात्मक भाषा से स्वभाव धर्म, अस्तित्व समग्र

भ्रम/बंधन का प्रथम चरण– प्रिय, हित, लाभात्मक दृष्टियों का आंशिक प्रयोग करते हुए जीवनी क्रम (में भ्रम/बंधन की पीड़ा नहीं) परंपरा को बनाए रखना

रचना सूत्र में तृप्ति के उपरांत अग्रिम अवस्था में उत्कर्ष

मानव में सुख की चाह बलवती, जीवों से भिन्न तरीकों से शरीर पोषण, संरक्षण की विधियाँ

जागृति क्रम में पीड़ा का कारण– युद्ध, द्रोह–विद्रोह, शोषण, अपना–पराया, दण्ड–विधान, महिला/पुरूष में अधिकार भेद, व्यापार व प्रौद्योगिकी प्रतीक मुद्रा के चंगुल में, व्यक्तिवादी अहंता, धरती का दोहन–शोषण, असंतुलन, प्रदूषण

पीड़ा क्रम में परिवर्तन की आवश्यकता, संभावना; प्रमाण तक पहुँचने की चाह मुक्ति हेतु अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

अनुभवमूलक विधि से अस्तित्व बोध पूर्वक मुक्ति

अनुभवगामी विधि– अनुभवमूलक अध्ययन प्रणाली

आशा बंधन– जीने की आशा विधि से सुखी होने के उद्देश्य से इन्द्रिय आस्वादन के लिए 4 विषयों को लक्ष्य मान लेना; इस हेतु जीवन शक्तियों को लगाने में तत्परता; भोग विधि, इन्द्रियों द्वारा सुखी होने के लिए दौड़ लगाना; भय से पीड़ित

आशा + विचार बंधन– तर्कपूर्वक वांगमय रचना; दूसरे समुदाय को विरोधी मानना; उपदेश व आश्वासन; किताब प्रमाण, उनका समर्थन; अनुमोदन करने वाले शिष्ट व आदर्श व्यक्ति; सर्वसम्मत समझदारी का निश्चयन नहीं; अपने विचार को श्रेष्ठ मानना; आस्था, भय, प्रलोभन से पीड़ित

आशा + विचार + इच्छा बंधन– जागृति क्रम में व्यक्त होना अति–आवश्यक, क्योंकि परिणाम में पीड़ा का आंकलन होना आवश्यक; इच्छा पूर्ति हेतु धरती, वन, मानव का शोषण; सत्ता प्राप्ति; सुविधा–संग्रह, भोग लक्ष्य; धर्म(सुविधा–संग्रह), राज्य (सामरिक–सामर्थ्य बढ़ाना+सत्ता संघर्ष), शिक्षा(वेतनभोगी), व्यापार (शोषणकर्ता) गद्दी– इनमें जो असफल वो चिंतित + कुण्ठित; ज्यादा से ज्यादा रचना कार्य की श्रेष्ठता को स्पष्ट करने के क्रम में

भ्रम व बंधन की पीड़ा की पराकाष्ठा में कोई ना कोई व्यक्ति अनुसंधान करता है। फलतः अनुभवमूलक संप्रेषणा परंपरा में उपलब्ध; अनुभव प्रमाण परंपरा में मानव ही मानव के लिए प्रेरक, कारक होने की विधि से लोक व्यापीकरण

जागृतिपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए वस्तु – बंधन का स्वरूप, मुक्ति की आवश्यकता, उसकी समीचीनता एवं लोक व्यापीकरण

मूल व्यक्ति अनुभव–प्रमाण पूर्वक जीता है। ऐसा सत्यापन ही वांगमय;

अध्ययनपूर्वक इंगित वस्तुएँ विधिवत् बोध होना ही अध्ययन की सार्थकता

जागृति के अनन्तर प्रयोजन – जीवन सहज, मानव सहज विधि से प्रमाण; जीवन सहज प्रयोजन–

सुख, शांति, संतोष, आनंद

जागृति एवं जागृतिपूर्णता

प्रमाण एवं प्रामाणिकतापूर्वक वैभवित

यही स्वानुशासन और परम स्वतंत्रता

मानव सहज प्रयोजन–

समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

स्वायत्त, परिवार, समाज, व्यवस्था

यह सर्वमानव का स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार

जागृति एवं प्रामाणिकता मानव परंपरा में संभव, इसलिए और शरीर रचना की प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं

जागृतिपूर्ण परंपरा में सर्वमानव व्यवस्था में जीना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करना स्वाभाविक, आवश्यक, अनिवार्य

स्वायत्त, मानव, परिवार मानव(व्यवस्था में जीने देकर जीना); फलतः जागृतिपूर्ण शिक्षा प्रणाली, पद्धति नीतिपूर्वक सर्वसुलभ; क्रियान्वयन क्रम में परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था

जीवन ही जागृतिपूर्वक भ्रम बंधन से मुक्ति– 10 क्रियाएँ– 122 आचरण (मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान)

जागृति चिंतन बल विधि से आरंभ; भ्रमबंधन इच्छा, विचार, आशा शक्ति विधि से साक्षित/कार्यरत

चयन के अनुरूप आस्वादन के अनुसार विश्लेषण, शरीर सीमावर्ती वस्तुओं का चित्रण, ये वस्तुएँ आस्वादन/भोगमूलक

मुक्ति–

यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता को यथावत् समझना

अस्तित्व, जीवन, मानवीयतापूर्ण आचरण का ज्ञान

हर अवस्था की वस्तुओं को रूप, गुण, स्वभाव, धर्म के रूप में जानना, मानना; तदनुरूप पहचानना, निर्वाह करना, फलतः वांछित परिणाम

अनुभवगामी विधि में न्याय, धर्म(समाधान) और सत्य साक्षात्कार एक साथ

अनुभव विधि से ही जागृति एवं जागृति का प्रमाण सहज रूप में परंपरा में उपलब्ध

न्याय, समाधान, सत्य(सर्वमानव में आवश्यकता स्वीकृत) व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में जीने की स्थिति में प्रमाणित

भ्रम की पीड़ा + जागृति की समीचीनता ⟶ अनुसंधान ⟶ अनुभव ⟶ प्रमाणपूर्वक जीना ⟶ शिक्षापूर्वक लोकव्यापीकरण

<u>मुक्ति का स्वरूप + प्रमाण</u>

धर्म गद्दीः कार्यक्रम– स्वार्थ, अज्ञान, पाप मुक्ति

राज्य गद्दीः कार्यक्रम– गलती को गलती से, अपराध को अपराध से, युद्ध को युद्ध से रोकना

जागृति बिन्दुएँ

1. अनुभव– अस्तित्व में जागृत होने के रूप में; सर्वसुलभ होने के रूप में
2. अनुभव– जीवन में से के लिए समीचीन

जागृतिः कल्पना से स्पष्टीकरण की ओर

ग्रह–गोल, धरती की 4 अवस्थाएँ, व्यापक में संपृक्तता– कैसा है

अस्तित्व कितना–

संपूर्ण अस्तित्व मानव की आवश्यकता से अधिक; संपूर्ण अस्तित्व मानव की आवश्यकता के अर्थ में समाहित नहीं; मानव सहज भाषा में समाता नहीं

क्यों है(अस्तित्व सहज सार्थकता)– सह–अस्तित्व नित्य प्रकटनशील; वर्तमान में प्रकाशित करना, होने की निरंतरता

विचार, चित्रण(शब्द, चित्रण, श्रुति, स्मृति)– अवधारणा संस्कार (जानना, मानना, पहचानना) / बोध– अनुभव (अस्तित्व मेंः नियंत्रण, साम्य ऊर्जा)

अनुभव ही भ्रम मुक्ति का नित्य स्रोत; अनुभवगामी विधि से अध्ययनपूर्वक, अनुभवमूलक विधि से अभिव्यक्त होना ही एक मात्र दिशा और उपाय

अस्तित्व 4 अवस्था के रूप में

स्थिति सत्य, वस्तुस्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य– अनुभव में स्पष्ट

आदर्शवादी विचार के अनुसार मोक्ष का स्वरूप :–

ईश्वरः रहस्यमय, सर्वशक्तिमान, सृष्टि, स्थिति और लय पर/में अधिकार रखने वाला

शरीर, जीव, आत्मा– मूल में ईश्वर (बनाने वाला)

जीव की मुक्ति– ईश्वर कृपा होने पर, संस्कारित करने हेतु – नाम, जाति, शिक्षा–दीक्षा, धर्म, कर्म संस्कार

भौतिकवाद– विज्ञान/व्यापार शिक्षा

धर्म परंपरा(संप्रदाय) गत लक्षणः– जन्म, शादी, मृत्यु के समय अभिव्यक्त होने के विविध तरीके

लक्ष्य– ध्यान, समाधि– विचार सीमित, बिंदुगत, न्यूनतम, शून्य– मौन मानसिकता – कोई कार्यक्रम संभव नहीं

विचारों का उद्‌गमन स्रोत– ''है, करना, चाहिए''– मेरे पास कुछ है, मुझे कुछ करना है, मुझे कुछ चाहिए; इनके साथ निषेध लगाना ही निर्विचार होने का सूत्र

चित्रणमूलक विधि से परिसीमित विचार के मूल में इंद्रिय (5+5) व्यापार व संबंधित नैसर्गिकता

साधना काल में या उपरांत स्वस्थ परिवार, समाज नहीं बन पाया।

स्वर्ग–नरक की परिकल्पना– प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, समुदाय की परस्परता में अपना–पराया का दीवाल

आस्था– न जानते हुए मान लेना

जीवन अपने जागृति को व्यक्त करने के लिए शरीर एक साधन, इन्द्रिय सन्निकर्ष एक माध्यम; मानव परंपरा ही जीवन जागृति प्रमाण का सूत्र और व्याख्या

न्याय, धर्म, सत्यात्मक दृष्टियाँ जागृति ही बंधन मुक्ति का सूत्र; मानवीयतापूर्ण आचरणपूर्वक(मूल्य, चरित्र, नैतिकता) प्रमाणित

मूल्य– परस्पर संबंध की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति (मानव केन्द्रित चिंतन/अध्ययन के आधार पर सफल)

चरित्र– स्वधन(प्रतिफल, पारितोष, पुरस्कार), स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार (सामाजिक नियम के रूप में संपन्न)

प्रतिफल– प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम का फलन– उपयोगिता और सुंदरता मूल्य संपन्न वस्तुएँ

पारितोष– अपने स्वधन को स्वयंस्फूर्त प्रसन्नता में से के लिए हस्तांतरित/अर्पित करना

पुरस्कार– किसी सार्थक घटना, कार्य, प्रमाण, अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन के फलस्वरूप उत्सव का अनुभव करता हुआ समारोह में अर्पित वस्तुएँ/धन)

नैतिकता– तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग,सुरक्षा

विवाह– संतान परंपरा के लिए आवश्यक; यौवन इसका आधार; प्रयोजन विधि से व्यवस्था में जीना(3 आयाम की सुलभता) एक अनिवार्यता

स्रोतः– शिक्षा–संस्कार, स्वास्थ्य–संयम कार्यकलाप

दयापूर्ण कार्य–व्यवहारः कर्तव्य + दया सूत्र; अर्थ का सदुपयोग कार्य; व्यवस्था स्रोत सहित समग्र व्यवस्था में भागीदारी; अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के लक्ष्य में प्रतिपादित

न्याय सुलभता से बंधन मुक्ति; शरीर/मोह के कारण ही संपूर्ण अन्याय+कुकर्म

न्याय प्रदायी योग्यता – परिवार मानव के रूप में जीने से सफल

मानवीय शिक्षा,संस्कार का सार्थक स्वरूपः– त्व सहित व्यवस्था के रूप में जीने की कला, विचार शैली, अनुभव बलार्जन करना

दिव्यमानवीयता– ज्ञानत्रय में प्रमाण + अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का स्रोत

जागृतिपूर्णता ही मुक्ति; आचरण में प्रमाणित, व्यवहार–कार्य में साक्षित, प्रकाशन स्वाभाविक

<u>बंधन मुक्ति क्रम, मुक्ति(मोक्ष) और अभ्यास</u>

सह–अस्तित्व में अनुभव सहज प्रयोजनों को प्रमाणित करना ही बंधन मुक्ति

जागृति(न्याय, धर्म, सत्य में) ही भ्रम मुक्ति का आधार है। अनुभव, अवधारणा और चिंतन ही मानव परंपरा में जागृति प्रमाणित होने का आधार

जीवन क्रियाकलाप की 2 स्थिति –

(1) चित्रण के अनुरूप वृत्ति और मन का परावर्तन और प्रत्यावर्तन होना

(2) अनुभव के अनुरूप बुद्धि, चित्त,वृत्ति का परावर्तन और प्रत्यावर्तन होना

शब्दः– क्रिया, वस्तु, स्थिति, गति, परिणाम, प्रक्रिया, घटना

विज्ञान, तकनीकी में विकास होने से मानव में कोई गुणात्मक परिवर्तन नहीं; युद्ध, भय, संघर्ष (मानव में निहित अमानवीयता) यथावत्

संघर्षः– दोनों का कम/अधिक नाश– बंधन की पराकाष्ठा का प्रकाशन, हर संघर्ष शांति, समाधान की अपेक्षा में, संघर्ष से समाधान की प्यास

संघर्ष– सुविधा, संग्रह हेतु– कोई तृप्ति नहीं

छल, कपट, दंभ, पाखण्ड परिवर्तित होकर स्वतंत्रता, न्याय, समाधान और प्रामाणिकतापूर्ण अधिकार इस हेतु अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

न्याय– संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति

सभी संबंध परस्परपूरक; पूरकता– पुष्टिकारी, संरक्षणकारी, अभ्युदयकारी और जागृतिकारी प्रयोजन

पुष्टिकारी प्रयोजन– शरीर, विचार, कार्य, आचरण, ज्ञान, दर्शन पोषण

मानव की गम्यस्थली– सर्वतोमुखी समाधान और प्रामाणिकता; कार्यरूप– सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी; आचरण– मानवीयतापूर्ण; सह–अस्तित्व में अनुभव, प्रमाण; 4 अवस्थाओं का विश्लेषण; उपलब्धि– जीवन अपेक्षा, मानव अपेक्षा

सह–अस्तित्व में जागृत होने का फलन= सर्वतोमुखी समाधान

जागृत विधि का लोकव्यापीकरण मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार, कार्यविधि

जागृति ही भ्रम मुक्ति का प्रमाण भी और लक्षण भी

अस्तित्व में अनुभव, जीवन अनुभूत, जीवन और शरीर के संयुक्त साकार रूप में मानव

अस्तित्व में मानव अविभाज्य, संपूर्ण प्रकृति 4 अवस्थाओं में

अनुभवमूलक विधि से विचार शैली व सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने हेतु जागृत मानव सहज जीने की कला ही मानव परंपरा का अक्षुण्ण गति

प्रयोग– सामान्य, महत्व आकांक्षा संबंधी वस्तुओं के रूप में प्रमाणित– व्यवस्था में उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशील

मानवीयतापूर्वक चरित्र प्रमाणित– सुख, सुन्दर, समाधान पूर्वक जीने की कला

स्थिति सत्य– सत्ता में संपृक्त प्रकृति; अस्तित्व ही संपूर्ण स्थिति, गति, सूत्र और व्याख्या है।

वस्तु स्थिति सत्य – देश, काल, दिशा – परस्परता में निश्चित दूरी ही देश, निश्चित गति ही काल, निश्चित क्रिया(आचरण) ही दिशा के रूप में व्याख्यायित

वस्तुगत सत्य– रूप, गुण, स्वभाव(मूल्य), धर्म

धर्म और मूल्यों के आधार पर ही मौलिकता की पहचान

गठनशील परमाणु अणुबंधन और भारबंधन पूर्वक कार्यरत

गठनपूर्ण परमाणु आशा बंधन से अपने कार्य गति पथ सहित पुंजाकार रूप में प्रतिष्ठित होना, ऐसे पुंजाकार का एक आकार होना, ऐसे आकार के एक शरीर रचना रचित रहना अस्तित्व सहज कार्यक्रम है।

सह–अस्तित्व– विकासक्रम– विकास– जागृतिक्रम– जागृति– सार्वभौम व्यवस्था सहज वैभव संपन्न; स्वराज्य व्यवस्था सहज वैभव संपन्न– परिवार मानव विधि से

(संबंध)न्यायपूर्वक जीना– परिवार और समाज सूत्र

उत्पादन पूर्वक जीना – परिवार व्यवस्था सूत्र व समाज व्यवस्था सूत्र

आयामत्रय सुलभता – परिवार व्यवस्था सूत्र व समाज व्यवस्था सूत्र

परिवार व्यवस्था सूत्र व समाज व्यवस्था सूत्र का स्रोत– आयाम द्वय कार्यकलाप

<u>बौद्धिक समाधान का फलन ही नियमत्रय</u>

अस्तित्व में अनुभव का स्वीकृति ही अस्तित्व बोध और सर्वतोमुखी समाधान

व्यवस्था में से के लिए मानव लक्ष्य को प्रमाणित करने की विधि– नियमत्रय के रूप में सार्थक

नियमपूर्वक ही व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी का स्वरूप

मनुष्य संस्कारानुषंगीय विधि से त्व सहित व्यवस्था

संस्कारानुषंगीयता का मूल रूप अनुभव के प्रकाश में किया गया स्वीकृतियाँ/ पूर्णता के अर्थ में अनुभवमूलक विधि से प्रस्तुत क्रियाकलाप

जागृति के साथ–साथ मानव की उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयताएँ फलवती

भय– प्रलोभन(के आधार पर संघर्ष)– आस्था(रूढ़िवादी, कट्टरपंथी स्थली)– सर्वतोमुखी समाधान ही एक मात्र दिशा और मार्ग

मानव विषय(इंद्रिय सन्निकर्ष केंद्रित), चित्रण(विश्लेषण केंद्रित (श्रोत– श्रुति,स्मृति), सुविधा–संग्रह में व्यस्त), चिंतन(अनुभवात्मक स्वीकृतियाँ स्वयंस्फूर्त रूप में (संस्कार), स्वायत्त मानव और परिवार मानव के रूप में प्रमाणित) अभ्यासी

मानवीयतापूर्ण संस्कार प्रतिष्ठा ही मानवत्व का स्थिर बिन्दु; स्वभाव गति प्रतिष्ठा में ही त्व सहित व्यवस्था अक्षुण्ण, मानवत्व ही मानव की स्वभाव गति

बौद्धिक समाधान का ध्रुवः– अस्तित्व और मानव होने की स्वीकृति

मानव परंपरा में जागृति और उसका प्रमाण ही तृप्ति का स्रोत; सर्वतोमुखी समाधान का प्रयोजन, कार्य और प्रमाण की आवश्यकता; जागृतिपूर्णता और प्रामाणिकता सहित ही अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था; सर्वतोमुखी समाधानपूर्वक ही स्वायत्त, परिवार, समाज, व्यवस्था मानव; जागृतिपूर्वक ही अज्ञात का ज्ञात, अप्राप्ति का प्राप्ति; जागृतिपूर्वक ही मानव अस्तित्व में अनुभूत

असंग्रह प्रतिष्ठा को समृद्धिपूर्वक; स्नेह प्रतिष्ठा को पूरकतापूर्वक; विद्या प्रतिष्ठा को जीवन विद्यापूर्वक; सरलता प्रतिष्ठा को सह–अस्तित्व दर्शनपूर्वक; अभय प्रतिष्ठा को मानवीयतापूर्ण आचरण पूर्वक– बौद्धिक नियम

मानवीयतापूर्ण आचरण ही सामाजिक नियम

बंधन–मुक्तिरूपी जागृति पूर्वक ही सर्वतोमुखी समाधान संपन्न– इस हेतु मानवीयतापूर्ण शिक्षा संस्कार ही विधि– ज्ञानत्रय ही शिक्षा संस्कार की मूल वस्तु; यह मानव जागृति परंपरा के लिए सार्थक

शिक्षा का मानवीयकरण – चेतना विकास, मूल्य शिक्षा का अध्ययन करना

अध्याय 6

द्रष्टा, कर्ता, भोक्ता

जीवन ही द्रष्टा, मानव परंपरा में जागृति प्रमाणित

वर्तमान में आँखों से देखना– इस हेतु यंत्र निर्माण– सिर्फ रूप दिखता है (आकार व आयतन का आंशिक भाग)

आँखों से अधिक कल्पना से अधिक समझ (रूप, गुण,स्वभाव, धर्म के अविभाज्य रूप में इकाई) अतः देखना= समझना

बिम्ब का प्रतिबिम्ब रहता ही है। ससम्मुखता में स्थित हर वस्तु का प्रतिबिम्ब रहता ही है। प्रतिबिम्बन का मूल वस्तु– रूप(इकाई), सत्ता पारदर्शी

हर समझ अनुभव की साक्षी में स्वीकृत और अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित

कल्पना(इच्छा, विचार, आशा) नियोजन(युद्ध, शासन, व्यापार, शिक्षा विधा में प्रयोग) से तृप्ति नहीं– अपेक्षाद्वय प्रमाणित नहीं

विगत की समीक्षा, वर्तमान में व्यवस्था, भविष्य के लिए व्यवस्थवादी कार्ययोजना मानव परंपरा को सफल बनाने का सुदृढ़ और सर्वमानव स्वीकार्य योग्य प्रस्ताव

गणित भी कल्पनाशीलता का प्रकाशन– रूप + सम–विषम गुण

त्व सहित व्यवस्था, मध्यस्थ गति के रूप में कार्यरत

मध्यस्थ गति= न्याय, धर्म, सत्य मूलक अभिव्यक्ति– अनुभवमूलक विधि से संपन्न

जीवन ज्ञान के साथ निष्ठा, अस्तित्व दर्शन के साथ निश्चयता और मानवीयतापूर्ण आचरण की अभिव्यक्ति में दृढ़तापूर्वक व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित – इस विधि से हर मानव द्रष्टा, कर्ता, भोक्ता

भाषा– कल्पना– चिंतन– अनुभव– प्रमाणः क्रमशः विस्तार व स्पष्ट अभिव्यक्ति

परंपराएँ भ्रमित रहने के कारण मानव सहज जागृति की इच्छा हर शरीर यात्रा में असफल(दिशा–विहीन, मार्ग–विहीन)

जीवन में चिंतनपूर्वक ही मानवापेक्षा व जीवनपेक्षा स्पष्ट– बोध व अनुभवपूर्वक पूर्णतया सार्थक– इस हेतु अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था की स्थापना

अनुभवमूलक ज्ञान= ज्ञानत्रय

विज्ञान= अस्तित्व सहज सह–अस्तित्व का विश्लेषण विधि से

विचार= अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन के रूप में

विवेक= यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता के आधार पर विवेचना

जानना, मानना, पहचानना; निर्वाह करने के क्रम में अभिव्यक्ति व संप्रेषणा; संप्रेषणा क्रम में आचरण व व्यवस्था में भागीदारी

ज्ञान जीवन में न कि शरीर में; शरीर की आवश्यकता मानव परंपरा में जीवन जागृति और उसकी प्रामाणिकता को प्रमाणित करने के अर्थ में; अधिक शक्ति व बल; कम शक्ति व बल संपन्न माध्यम के द्वारा प्रकाशित

मेधस तंत्र व हृदय तंत्र के आधार पर शरीर के बाकी सभी तंत्र (रस–रसायन स्रोत, पाचन परिणाम, अनावश्यकता का विसर्जन)कार्यरत; यही शरीर व्यवस्था; जीवन्त न रहने की स्थिति में ज्ञानेन्द्रिय का कियाकलाप + आहार आदि कियाएँ शून्य

द्रष्टा पद का सर्वप्रथम उपलब्धि शरीर का द्रष्टा होना

द्रष्टा होने का सतत फलनः हर स्थिति–गति, योग–संयोग, फल–परिणाम परिपाक और प्रवृत्तियों का मूल्यांकन होना सहज

जीवन का स्वरूप, स्वीकृति व उनका अनुभव प्रतिष्ठा= जीवन ज्ञान– जीवन में से के लिए

अस्त्वि सहज स्वरूप जैसा है, इसका स्वीकृति और उसमें अनुभव स्वयं में से स्फूर्त प्रवृत्ति– सह–अस्तित्व दर्शन का तात्पर्य– सह–अस्तित्व में से के लिए

देखने वाल जीवन, दिखने वाला सह–अस्तित्व

परंपरागत प्रमाणः–

शब्द(वस्तु प्रमाण), आप्त वाक्य(आस्था विधि अध्ययन गम्य नहीं);

प्रत्यक्ष(आँख से), आगम(अनुमान में न आया हो, भविष्य में आने वाला हो),

अनुमान(कल्पना क्षेत्र)

ज्ञानत्रय विधि से प्रमाण त्रय

अपने में परीक्षण, निरीक्षणपूर्वक अनुभव सत्यापित

व्यवहार– व्यवस्था में भागीदारी + आचरण का संयुक्त रूप; इसमें विचार शैली + अनुभव बल समाहित; प्रयोग कार्य में विचार शैली + व्यवहार + प्रयोजन सूत्र समाहित;

मूल प्रमाण(परम)= अनुभव; यही विचार शैली, व्यवहार और प्रयोग में प्रमाणित

द्रष्टा पद प्रतिष्ठा(सह–अस्तित्व में अनुभव) का प्रमाण– प्रमाण त्रय को प्रमाणित करना; जीवन ही मानव परंपरा में द्रष्टा पद(जागृति) प्रतिष्ठा सहित कर्ता(करना ही कर्ता पद) व भोक्ता(जीवन व मानव अपेक्षा को भूरि–भूरि विधि से सार्थकता में जीना ही भोगना, जीना=भोक्ता पद) के रूप में सफल

करने के क्रम में शरीर एक उपयोगी साधन + अध्ययन क्रम में सार्थक माध्यम

अध्ययन करना + कराना भी कर्त्ता की संज्ञा में

संपूर्ण भौतिक, रासायनिक वस्तुओं का शरीर पोषण, संरक्षण, समाज गति के अर्थ में अर्पण, समर्पण पूर्वक समृद्धि स्वीकृत

ज्ञान, ज्ञेय, ज्ञाताः

ज्ञाता– जागृत जीवन(अस्तित्व में अनुभूत जीवन– प्रत्यावर्तन में)

ज्ञेय– सह–अस्तित्व(जीवन सहित संपूर्ण अस्तित्व)= अस्तित्व = सत्ता में संपृक्त प्रकृति

ज्ञान– जागृतिपूर्ण जीवन क्रियाकलाप(जागृत जीवन का परावर्तन क्रियाकलाप)

अस्तित्व में अनुभव का परावर्तन= प्रामाणिकता= ज्ञान, विवेक, विज्ञान(परावर्तन में)

अस्तित्व में अनुभव की स्थिति में ज्ञान, ज्ञेय, ज्ञाता में एकरूपता– सह–अस्तित्व के रूप में

अनुभूत होने की स्थिति में सत्तामयता ही व्यापक होने के कारण अनुभव की वस्तु बनी रहती है; इसी में संपूर्ण इकाइयाँ दृश्यमान

सत्तामयता में अभिभूत होना= सत्ता पारगामी(अनुभव का प्रधान तथ्य), व्यापक पारदर्शी होना अनुभव में आता है।

सत्ता में अनुभव के उपरांत द्रष्टा पद प्रतिष्ठा; इसके अनन्तर सह–अस्तित्व रूपी संपूर्ण दृश्य जीवन प्रकाश में समझ में आता है।

कार्य, कारण, कर्ता :– मानव कर्ता पद; संपूर्ण अस्तित्व कार्य, कारण पद

कार्य, कारण, कर्ता में सामरस्यता ही द्रष्टा पद प्रतिष्ठा का सूत्र; कार्य, कारण का द्रष्टा जीवन– केवल द्रष्टा ही कर्ता पद में, बाकी सभी कार्य पद में

सत्ता में संपृक्त प्रकृति रूपी सह–अस्तित्व ही कार्य, कारण के रूप में वर्तमान

सह–अस्तित्व ही अस्तित्व सहज संपूर्ण क्रियाकलाप का कारण= कारण

सह–अस्तित्व ही क्रियाकलाप= कार्य

साधन, साध्य, साधक –

साधक– मानव

साध्य– मानव + जीवन लक्ष्य

साधन– साध्य और साधक के बीच में दूरी को घटाकर लक्ष्य सामीप्य, सान्निध्य, समरूप्य क्रम में प्रमाणित होने के क्रम में प्रयुक्त सभी उपाय ही साधन

ध्यान की उपलब्धि– निर्विचार स्थिति(समाधि);

समाधि स्थिति में– विश्लेषण कार्यक्रम और कार्यक्रम संबंधी प्रवृत्तियों से मुक्ति; स्वान्त सुख; मानव का उपयोग/प्रयोजन शून्य; फलस्वरूप संयम की तत्परता; फलस्वरूप सह–अस्तित्व समझ में आया; भूत–भविष्य की पीड़ा नहीं, वर्तमान का विरोध नहीं, भय प्रलोभन का प्रभाव नहीं, अभाव की पीड़ा नहीं

साधना से मनोकामना पूर्ण होने का चिन्हित प्रमाण नहीं मिलता। आस्था सूत्र व घटनाकाल के आधार पर संबोधन लगाने की बात

स्वान्तः सुख का प्रमाण समाज में सर्वसुख के रूप में परिवर्तित होने का कोई सूत्र नहीं; इसलिए इस अवस्था में प्रवेश पाने का भी काल निर्णय नहीं

संपूर्ण ईमानदारी, निष्ठा ''समाधि स्थिति'' के प्रति अर्पित रहने के क्रम में समाधि स्थली तक मन, बुद्धि, चित्त, वृत्तियाँ प्रवेश कर पाते हैं; फलस्वरूप इनकी कोई गति शेष नहीं है; प्रयोजन/कार्यक्रम का प्रसवन नहीं

सर्वशुभ/शुभ विधि से ही परंपरा संभव

समाधि लक्ष्य के अतिरिक्त बाकी लक्ष्य कल्पना–क्षेत्र की सजावट

समाधिगामी साधना + मनोकामना प्राप्तिगामी साधनाएँ

भ्रमित साधक + साधन के संयोग में– ईर्ष्या, द्वेष, श्राप, विरोध, वाद–विवाद, प्रलोभन, भय, समस्या

करोड़ों में एक रहस्यवादी विधि से स्वान्तः सुख की स्थिति को पाते हैं; इससे भी सर्वशुभ का रास्ता, दिशा, सूत्र, व्याख्या, अध्ययन प्रक्रिया, परंपरागम्य नहीं हुई

वावजूद भी समुदायों की परस्परता में निहित द्रोह, विद्रोह, शोषण, युद्ध समाप्त नहीं; समुदायों में निहित अंतर्विरोध शांत नहीं

<u>जागृति विधि और अभ्यास</u>

अस्तित्वमूलक मानव के केन्द्रित चिंतन ज्ञान, दर्शन, आचरण ध्रुवीकृत रूप मे अध्ययन गम्य; जानना, मानन, पहचानना ही अवधारणा; इसे कार्य, व्यवहार, व्यवस्था में व्यक्त कर देना प्रामाणिकता; अध्ययन रूपी साधना विधि से जागृति

हर मानव साधक, साध्य–जागृति, साधन– जागृतिगामी अध्ययन प्रणाली

जागृति= ज्ञानत्रय;

अभ्यास विधि – (1) अनुसंधान

(2) अध्ययन पूर्वक शोध, शोधपूर्वक अध्ययन

(3) उपदेश विधि में भ्रमित होने की संभावना सदा

परंपरा में जिस आशय के लिए आदेश–निर्देश है; वह तर्कसंगत–व्यवहार संगत बोध होने की प्रक्रिया, प्रणाली, पद्धति ही अध्ययन

तर्क का सार्थक स्वरूपः –विज्ञान सम्मत विवेक व विवेक सम्मत विज्ञान

ऐसी अभ्यास विधि की अपेक्षा जो सर्वमानव स्वीकृत हो, प्रयोजनशील हो;आ शा के रूप में सार्वभौमता हर मानव, परंपरा, जाति, पंथ, समुदाय, मत, संप्रदाय में समाहित

जागृति विधि साधना का अभीष्ट एवं प्रमाण= सर्वतोमुखी समाधान

जागृति सहज प्रमाणों को प्रमाणित करना ही अभ्यास; सर्वतोमुखी समाधान के लिए किया गया अनुभव, विचार, व्यवहार समुच्चय ही अभ्यास

मानव परंपरा वैभवित होने का मार्ग केवल सह–अस्तित्व में अनुभवमूलक प्रणाली, जो लक्ष्यमूलक(जीवनापेक्षा सफल), मूल्यमूलक(मानवापेक्षा सफल) अपेक्षाओं को सार्थक रूप देने में समर्थ

प्रणालियाँ– इन्द्रिय सन्निकर्षात्मक/अनुभवात्मक

जागृति + प्रमाण

> जानने, मानने, पहचानने में निरीक्षण समर्थ होना और निर्वाह करने में निष्णात होना
>
> कृत, कारित, अनुमोदित, कायिक, वाचिक, मानसिक विधाओं में जागृतिपूर्ण क्रियाकलापों को प्रमाणित करना

जागृति ही विधि, प्रमाणित करना ही (व्यवस्था= 5 आयाम की सुलभता)

परंपरा में जागृति का प्रमाण= मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार

जागृति और व्यवस्था के निरंतरता क्रम में स्वास्थ्य–संयम प्रणाली

<u>अभ्यास और साधना, आराधनाः</u>

आराधना– आर्तता(असमर्थता) को अर्हता(समर्थता)में परिवर्तित करने हेतु किसी सर्वसमर्थ/संपन्न अज्ञात के अस्तित्व को मानते हुए आर्तनाद क्रियाकलाप; व्यक्तिवादी; इष्ट/अनिष्ट घटनाओं को आराधना का फल मानना

साधनाः– अपने सुधार हेतु किया गया प्रयास; सुधार का तृप्ति बिन्दु जागृति; साधना में शुभकामना से प्रवृत्त

अभ्यासः– जागृति को अभ्युदय(सर्वतोमुखी समाधान) के रूप में व्यवहृत करना

निःश्रेयस= जागृति पूर्णता

अभ्यास ही अनुसंधान कार्यकलाप; प्रवृत्तियाँ अनुसंधान हेतु मूल शक्ति

वादः– मानव परंपरा में एक–दूसरे के बीच संप्रेषणा कार्य/संभाषण

तथ्य के प्रति जागृति व उसकी संप्रेषणा

जागृति विधि से मानव सर्वाधिक उपकारी;

सह–अस्तित्व में अनुभव सहज प्रामाणिकता सहित सर्वतोमुखी समाधान, समाधान, समृद्धि संपन्न स्थिति+गति= अन्य की जागृति हेतु योग्य प्रस्तुति

जागृतिगामी अध्ययन प्रणाली पूर्वक हर व्यक्ति स्वायत्त; न्याय, धर्म, सत्य की दृष्टि

कार्य, कर्ता, कारणः–

हर मानव इच्छित–अनिच्छित, परेच्छित विधि से भोक्ता

कुछ करने के आधार पर भोग्यमान वस्तुओं की प्राप्ति

कारणः– मानव–दृष्टि, दृष्टि के कारण कार्य, कार्य के कारण से भोग

परंपरा खराब होने के बावजूद; व्यक्ति उतना खराब नहीं

दृष्टि की क्रियाशीलता, जागृति का मूल कारण– सह–अस्तित्व

एकान्त और सह–अस्तित्व

एकान्त– रहस्यमय, किसी एक से अस्तित्व पैदा, उसी में लय, उसे प्रसन्न करने हेतु एकान्त

सह–अस्तित्व नियम है, नियंता नहीं; भौतिक–रासायनिक रचना–विरचना है, लय नहीं; अस्तित्व न घटता है न बढ़ता है– स्थिर, नित्य वर्तमान

आत्मा, परमात्मा, अस्तित्व

व्यापक(परमात्मा– भाग–विभाग नहीं, पारगामी, पारदर्शी) में अनन्त इकाई रूपी प्रकृति(का मूल आधार परमाणु; ऊर्जा संपन्न, बल संपन्न; आशा रूप में जीवन में) संपृक्त(नियंत्रित, संरक्षित)= व्यापक में अनन्त का अविभाज्य वर्तमान

अध्यात्मः– सभी आत्माओं का आधार रूप; पदार्थ सत्ता को घेर नहीं पाता

<u>भोक्ता, भोग्य, भोग</u>

भोग= सुख; भोग के मूल में सुखापेक्षा; संवेदना का भोग क्षणभंगुर

भोक्ता– जीवन

भोग्य– व्यवस्था

भोग का लक्ष्य– जीवनापेक्षा, मानवापेक्षा(शरीर सहित)

अभी तक न्यायपूर्ण व्यवहार, समाधानपूर्ण व्यवस्था, मानवीयतापूर्ण शिक्षा इस धरती पर नहीं; बल्कि गलती को गलती, अपराध को अपराध, युद्ध को युद्ध से रोकने की मानसिकता + जनकल्याण के नाम पर सुविधाएँ।

<u>सिद्धि–चमत्कार</u>

अस्तित्व में कोई सिद्धि–चमत्कार नहीं, अस्तित्व क्रमबद्ध, नियमित, संतुलित, व्यवस्थित; समाधि के अतिरिक्त बाकी सभी लक्ष्य यश, कीर्ति, सुविधा–संग्रह के रूप में

सर्वशुभ समझदारी ही है।

अध्याय 7

जागृति–कैवल्य

जागृति– ज्ञानत्रय

कैवल्य– समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण सहित अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन; फलतः अपेक्षाद्वय प्रमाणित, संतुष्ट, भ्रममुक्ति, बंधनमुक्ति, सर्वतोमुखी समाधान(अनुभव, प्रमाण के आधार पर)

जागृति का प्रमाणः– स्वायत्त, परिवार, समाज, व्यवस्था मानव; परंपरा 5 आयाम में जागृत

द्रष्टापद जागृति योगफल में ही कैवल्य न कि मोक्ष में

प्रमाण का धारक–वाहकः– अध्यापक, निर्देशिका–वांगमय

अध्ययनपूर्वक(तर्कसंगत विधि से) अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के फलन में परंपरा जागृत

कैवल्य में

शरीर यात्रा की आवश्यकता शेष नहीं

10 क्रियाएँ अनुभवमूलक, नित्य उत्सव

सर्वशुभ विधिः– जागृतिमूलक अभिव्यक्ति + जागृतिगामी शिक्षा–संस्कार

परंपरा प्रमाणत्रय से प्रमाणित; लक्ष्य– अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था

प्रयोग प्रमाण– सामान्य–आकांक्षा + महत्वाकांक्षा

अनुभवमूलक विधि से ही प्रयोग व व्यवहार प्रमाणित

न्याय, उत्पादन, विनिमय– न्यूनतम 3 आयाम में जीना– जागृति/क्रियापूर्णता

अधिकतम 5 आयाम में जीना– जागृतिपूर्ण/आचरणपूर्णता

अनुभवमूलक विधि से जागृति व कैवल्य प्रमाणित

<u>मानव जीवन मूलक व्यवस्था</u>

<u>मानव शरीर मूलक व्यवस्था नहीं</u>

मानव ही अस्तित्व का द्रष्टा; संपूर्ण भावों का स्वरूप ही अस्तित्व

कल्पना– अस्तित्व के भाव (एवं अभाव)का

अभी विकास का मापदंड– मुद्रा, समर–शक्तियाँ

मानवाकांक्षा सम्मत व्यवस्थाः– जीवनमूलक विधि से 6 दृष्टि एवं सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक प्रमाणित

अस्तित्व लाभ–हानि से मुक्त, एक–दूसरे का पूरक

जानना + मानना(संज्ञानशीलता, संज्ञानीयता) पहचानना, निर्वाह करना (संवेदनशीलता) का धारक वाहक– जीवन

शरीर में मेधस ही सर्वोपरि तन्त्र

जागृतिपूर्वक अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही मानव का सुखद, सुन्दर, समाधानपूर्ण कार्य